श्रृंगी ऋषि के उर्द्धाचारज, तिनके सरस्वती भारती पुरी ।
ए दस नाम विस्तार कलिजुग में, सन्यास सम्प्रदा प्रगट करी ॥४५॥

श्रृंगी ऋषि के उर्ध्वाचार्य हुए । उनके सरस्वती, भारती और पुरी नाम से शिष्य हुए । इस प्रकार कलियुग में दसनाम से यह सन्यास मत प्रसिद्ध है जिसे हमने आपको बताया है ।

(प्रकरण ३६, चौपाई १७२७)

अथ षट दर्सन की बिध

षट दर्सन बोले तबे, प्राचीन हम मत ।
सो देखो तुम समझके, भगवत प्रापत सत ॥१॥

तब खट दर्शनों के आचार्य बोले कि हमारा मत सबसे प्राचीन है । आप इसे समझ कर देखिये । इससे साक्षात् परमात्मा की प्राप्ति होती है ।

चतुर्मुखी ब्रह्मा सदा, चार वेद नित्यान ।
अध्ययन अहनिस करें, पूर्व मुखें ऋग जान ॥२॥

ब्रह्मा जी के चार मुखों से सदा ही चारों वेदों का अध्ययन दिन-रात होता रहता है । पूर्व मुख से ऋग्वेद का उच्चारण होता है ।

अध्ययन उत्तर मुखें, करें अथरवन वेद ।
पच्छिम मुख तें बोलहीं, यजुर्वेद के भेद ॥३॥

उत्तर मुख से अथर्ववेद का उच्चारण होता है । पश्चिम मुख से यजुर्वेद के भेदों का उच्चारण होता है।

दखिन मुख ते उचरे, सामवेद नित्यान ।
तिनके षट अंग हैं सही, कहों तिनके प्रमान ॥४॥

दक्षिण मुख से सामवेद का सर्वदा ही उच्चारण होता है । इन चारों वेदों के छः अंग हैं, जो प्रमाण सहित आपको बताते हैं ।

प्रगट भये मुख पूर्व तें, नैयायिक दरसन ।
पच्छिम मुख तें प्रगटे, तिनके कहों बचन ॥५॥

पूर्व के मुख से न्याय दर्शन हुआ है । पश्चिम मुख से तीन दर्शन प्रकट हुए हैं जिनके विषय में हम कहते हैं ।

Nijanand App

पातांजल और सांख्यमत, वैसेसिक परवान ।
पच्छिम मुख तें प्रगटे, तीन सास्त्र ए जान ॥६॥

पातांजल, सांख्य और वैशेषिक दर्शन हुए हैं । पश्चिम मुख से ये तीनों शास्त्र प्रकट हुए हैं ।

मीमांसा दरसन चतुर, दखिन मुख तें होए ।
अति निरमल वेदान्त मत, उत्तर मुख ते सोए ॥७॥

दक्षिण मुख से मीमांसा दर्शन प्रकट हुआ है, इस प्रकार वेदान्त दर्शन उत्तर के मुख से प्रकट हुआ है ।

एह विध खट दरसन भये, तिनके कहों प्रमान ।
खट आचारज हैं सही, नाम सुनो तिह ज्ञान ॥८॥

इस प्रकार खट दर्शन बने हैं । अब हम उनके प्रमाण देते हैं । उनके छः आचार्य हैं । उनके नाम सुनिए।

गौतम तें प्रत्यक्ष हुआ, न्याय सास्त्र प्रकास ।
मीमांसा दो मिल कही, जैमुन जी और व्यास ॥९॥

गौतम ऋषि से न्याय दर्शन, मीमांसा को व्यास जी और जैमिनी ने कहा ।

कर्म विवेक जैमुन कह्यो, सारीरिक कृत व्यास ।
मीमांसा की दोय विधि, कही तुम्हें प्रकास ॥१०॥

जैमिनी ने पूर्व मीमांसा में कर्म की व्याख्या की है । शारीरिक सूत्र अर्थात् वेदान्त की रचना व्यास जी ने कही है । मीमांसा दर्शन के ये दो भेद आपसे कहे हैं ।

कपिल देव तें सांख्य है, पातान्जल मत सेस ।
कर्ण देव वैसेसिक, सिव वेदान्त उपदेस ॥११॥

कपिल ने सांख्य दर्शन कहा है । शेष के अवतार पातन्जलि ऋषि ने पाताञ्जल दर्शन (योग दर्शन) की रचना की है । कर्णदेव ने वैशेषिक दर्शन कहा है । शिवजी ने वेदान्त दर्शन कहा है जिसे व्यास जी ने लिपिबद्ध किया है ।

ए आचारज मूल हैं, छेऊ सास्त्र के लेख ।
वाद चतुर को करत है, भिन्न भिन्न मत देख ॥१२॥

छः शास्त्रों का विस्तार छः आचार्यों ने किया है । ये छः दर्शन चारों वेदों का सार तो कहते हैं किन्तु इन छहों का जुदा-जुदा सिद्धान्त है ।

Nijanand App

नैयायिक दरसन की, भेद वाद विध आये ।
माया जीव ईस्वर त्रई, भिन्न अनादि सुहाये ॥१३॥

न्याय दर्शन की विधि भेद सहित बताते हैं । माया, जीव और ईश्वर तीनों अलग-अलग हैं तथा अनादि हैं ।

बीस एक परनालिका, सीढ़ी दुख की जौन ।
नास होय तब सुख को, प्रापत होवे तौन ॥१४॥

तीनों ही शरीर की २१ सीढ़ियां, जो दुःख से भरपूर हैं, उनमें रहते हैं । तब श्री जी ने कहा तब तो सुख का नाश ही हो गया तो उसकी प्राप्ति हमें कैसे हो सकती है ।

प्रसन कियो श्रीजू तबे, तुममें नही विचार ।
ईस्वर जीव विनास है, तुम्हारे बचन मंझार ॥१५॥

तब श्री जी ने प्रश्न किया कि तुम्हारे कथन के अनुसार तो ईश्वर और जीव का नाश हो जाता है। जिसके विषय में आपको विचार ही नहीं है ।

बीस एक सीढ़ियां कही, दुख की भारी जौन ।
तिन मध्य माया जीव सब, कहो सुख की सो कौन ॥१६॥

जो आपने दुःख की २१ सीढ़ियां कही हैं, उसके मध्य में माया, ईश्वर और जीव का ठिकाना बताते हैं तो यह बताइए कि सुख कहाँ है ?

सूक्ष्म सरूप नित तुम कह्यो, स्थूल कहत हो नास ।
बीस एक सीढ़ियन से, कहां नित को बास ॥१७॥

आप सूक्ष्म स्वरूप को अखंड कहते हैं तथा स्थूल रूप का नाश कहते हैं तो २१ सीढ़ियां तो स्थूल शरीर के अन्दर हैं फिर अखण्ड सूक्ष्म का ठिकाना कहां पर है ?

तब मीमांसा दरसनी, बोले कर्म प्रधान ।
कारण करता कर्म है, कर्म इस्ट प्रमान ॥१८॥

न्याय दर्शन वाले जब श्री जी के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके तो मीमांसा दर्शन वाले बोले कि कर्म ही सबसे प्रधान है । इसलिए कर्म ही कारण है, कर्म ही कर्ता है तथा कर्म ही परमात्मा है ।

जीव ईस्वर ब्रह्म हैं, सब कर्मन को रूप ।
कर्म बिना कछु और नहीं, सदा अनादि अनूप ॥१९॥

जीव, ईश्वर और ब्रह्म सभी कर्मों के ही रूप हैं । कर्म के बिना और कुछ भी नहीं है । कर्म अनादि और उपमा से रहित है ।

Nijanand App

श्री जी बोले प्रस्न तब, कर्म विषे हैं भ्रांत ।
ब्रह्म अखण्ड सरूप हैं, सदा एक रस जात ॥२०॥

तब श्री जी ने प्रश्न किया कि कर्म में सदा ही भ्रान्ति होती है तथा ब्रह्म सदा अखण्ड और एक रस स्वरूप वाला है ।

कर्म तहां उपजे खपे, थिरता उनमें नाहिं ।
अहंकार मन का अमल, कर्म लगत है ताहिं ॥२१॥

कर्म में स्थिरता नहीं होती है । वह बनता और मिटता है । अहंकार मन का अमल है और कर्म मन के अहं से बनता है ।

अहंकार मन जीव में, तिहितें कर्मी सोए ।
मन पहुंचे नही ब्रह्म को, कर्म तहां क्यों होए ॥२२॥

अहंकार मन और जीव को आता है, जिससे कर्म की उत्पत्ति होती है । जहां ब्रह्म है वहां मन पहुंच ही नहीं सकता । जब मन ही ब्रह्म तक नही पहुंच सकता तो फिर वहां कर्म कैसे हो सकता है अर्थात् जहां ब्रह्म है वहां कर्म नहीं और जहां कर्म है वहां ब्रह्म नहीं ।

माया ते पुनि रहित हैं, ब्रह्म सरूप समान ।
वेद सास्त्र में यों कह्यो, तुममें ताना तान ॥२३॥

ब्रह्म सदा माया से रहित है । वेद और शास्त्रों में ऐसा ही लिखा है । आप लोग व्यर्थ की खैंचा-खेंच में पड़े हैं ।

सांख्य सास्त्र के दरसनी, बोले तबै विचार ।
प्रकृत पुरूष सबके परे, सबको कारण सार ॥२४॥

तब सांख्य दर्शन के आचार्यों ने अपना विचार कहा कि प्रकृति और पुरूष जो सबसे परे हैं वे ही सबको बनाने वाले परमात्मा हैं ।

प्रकृत पुरूष जब मिलत हैं, जगत प्रगट तब होए ।
भिन्न भये मिट जात हैं, हमरो मत यह सोए ॥२५॥

प्रकृति और पुरूष जब मिलते हैं तो जगत प्रकट होता है तथा जब अलग होते हैं तो जगत का नाश हो जाता है । हमारा यही मत है ।

Nijanand App

प्रकृत पुरूष तें कहत हो, जगत भयो सब एह ।
सूरज दृस्टें तिमिर रहें, एही बड़ो सन्देह ॥२६॥

तब श्री जी ने कहा कि जो आपने प्रकृति और पुरूष से जगत की उत्पत्ति कही है, यह तो सूरज के निकलने पर अंधेरा रहने के कथन के समान है । जो बड़े संदेह की बात है । कृपया इसे समझाइये ।

महाप्रलय सब जगत को, प्रकृत पुरूष लों होए ।
रूप रहे नही प्रकृत को, मिले कहां ए दोए ॥२७॥

जब महाप्रलय होता है तो प्रकृति पुरूष तक जगत का नाश हो जाता है । महाप्रलय में जब प्रकृति का रूप ही नहीं रहेगा तो ये दोनों कहां और कैसे रहेंगे ।

निराकार के मूर्त है, भेद कहो समझाए ।
प्रलय मध्य अस्थान कहां, रहे कहो सब भाए ॥२८॥

परमात्मा को आप पहले ही निराकार स्वरूप कहते हो जो महाप्रलय में नहीं रहेगा । इसका भेद समझाकर कहिए कि महाप्रलय में उसका स्थान कहां रहेगा ?

जो तुम अपनी बुद्ध कर, निराकार कहो ताहिं ।
तो मिलन कहो कैसे भयो, दोऊ भेद पुनि नाहिं ॥२९॥

यदि आप अपनी बुद्धि से परमात्मा को निराकार कहते हैं तो प्रकृति से उनका मिलन कैसे हुआ । मिल तो वही सकता है जिसका कोई स्वरूप है । जब परमात्मा का कोई स्वरूप ही नही है तथा महाप्रलय में प्रकृति का रूप ही नहीं रहता तो ये दोनों बातें एक साथ कैसे हो सकती हैं ।

वैशेषक दरसन तब बोले, सबको मूल काल मत खोले ।
काल पाए उपजत है एही, ख्याल खेलावत सबको तेही ॥३०॥

सांख्य दर्शन वाले श्री जी के प्रश्न का जब उत्तर नही दे सके तो वैशेषिक दर्शन वाले बोले कि सब बातों का मूल काल ही है जिसके भेद वैशेषिक दर्शन ही खोल सकता है । काल से ही सारा जगत प्रकट होता है तथा काल की ही दृष्टि में सारा ब्रह्मांड बन मिट रहा है ।

सबको खाए करत है नासा, एही रूप ब्रह्म को वासा ।
श्री जु प्रस्न कियो तब तिनको, मूल कहत हो काल जो सब को ॥३१॥

काल ही सबको खाकर नाश करता है । काल ही ब्रह्म का स्वरूप है । तब श्री जी ने उनसे प्रश्न किया कि यदि आप काल को ही सबका मूल कहते हैं तो

Nijanand App

वेद वाक्य मध्य काल को नास, काल रहित है ब्रह्म प्रकास ।
कह्यो श्रुति स्मृति के माहीं, काल तहां पहुंचत है नाहीं ॥३२॥

वेद के अन्दर काल का नाश कहा गया है । ब्रह्म को काल से रहित बताया गया है । श्रुति और स्मृति में भी कहा गया है कि जहां ब्रह्म है वहां काल नही पहुंच सकता ।

काल पाये उपजे सो बिनसे, उतपत लीन होय सब तिनसे ।
ब्रह्म माहीं उतपत लय नाहीं, सब तें दूर रहे सब माहीं ॥३३॥

श्री जी ने कहा कि काल से तो बनने और मिटने का काम होता है । ब्रह्म में बनना मिटना होता ही नहीं है क्योंकि वह अखण्ड है । ब्रह्म सबसे दूर है तथा सत्ता रूप से सबके अन्दर है ।

कह्यो सरूप ब्रह्म को ऐसो, तुम तो कहत हो सबलिक जैसो ।
अंग सबलिक माया माहीं, निर्विकार सब ही में नाहीं ॥३४॥

वेदों में ब्रह्म का अखण्ड और अनादि स्वरूप कहा गया है जबकी आप तो उसे बनने और मिटने वाला कहते हैं । माया सबलिक से उत्पन्न होती है और माया में ही बनने मिटने का कार्य होता है । ब्रह्म निर्विकार है । वह सबमें नहीं है ।

होय काल मध्य ब्रह्म सो नाहीं, या विध कहयो वेद के माहीं ।
निराकार तुम काले कहो, तैसो रूप ब्रह्म को लहो ॥३५॥

वेद में भी स्पष्ट लिखा है कि जो प्रलय में नष्ट हो जाता है वह ब्रह्म नहीं है । फिर आप काल को भी निराकार कहते हैं और ब्रह्म का भी रूप वैसा ही लेते हैं । इसका भेद समझाइये ।

तब बोले पातांजल ज्ञानी, व्यापक ब्रह्म सकल मध्य जानी ।
एही भवन ब्रह्म को लेखो, व्यापक इतहीं है तुम देखो ॥३६॥

जब वैशेषिक दर्शन के आचार्य श्री जी के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके तब पातांजल दर्शन वाले बोले कि ब्रह्म सर्वव्यापक तथा सबके अन्दर है और यह सारा ब्रह्माण्ड ब्रह्म का ही घर है तथा कण-कण में वह ही व्यापक है ।

पिण्ड माहिं आठ अंग लेके, खोज कीजिये जब चित दे के ।
नाड़ी चक्र सोधिये जबहीं, मिले ब्रह्म आप में तबहीं ॥३७॥

पिण्ड अर्थात् शरीर के अन्दर आठ अंगों सें वह मिलता है । जब चित्त देकर खोज करें और नाड़ी चक्र शोधकर खोज करें तो ब्रह्म अपने शरीर में ही मिल जाता है ।

Nijanand App

आठ अंग योग के जेही, नाम कहत हों तिनके एही ।
आसन प्राणायाम जो कहिये, प्रत्याहार धारणा लहिये ॥३८॥

योग की आठ क्रियाओं के नाम हम आपसे कहते हैं, यथा-आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा

ध्यान समाध नेम जप जोई, आठों अंग योग के सोई ।
ज्योत रूप तुम ब्रह्म ही मानों, कारण बीज जगत को जानो ॥३९॥

ध्यान, समाधि, यम और नियम । ये योग के आठ अंग हैं । ब्रह्म का रूप ज्योति स्वरूप है । वह ही जगत को बनाने वाला है ।

उपजे उपजावे सब यामें, जगत रहत किरना सम तामें ।
बुद्ध विषे लेओ ऐ मत सार, ग्रहो चित में कर निरधार ॥४०॥

ब्रह्म से ही सब कुछ उत्पन्न होता है । उस ब्रह्म मे यह जगत किरणों के समान स्थित है । इस सार को बुद्धि में लीजिए तथा चित्त देकर ग्रहण कीजिए ।

श्री जी पूछयो प्रश्न विवेकें, मेटो आसंका ए चित देके ।
ब्रह्म सच्चिदानन्द सरूप, जगत असत जड़ दुख को रूप ॥४१॥

तब श्री जी ने प्रश्न किया कि मेरी एक शंका है । उसे मिटाइए कि ब्रह्म सत् चिद् और आनन्द स्वरूप है । जगत असत, जड़ और दुःख का रूप है तो ये दोनों इकट्ठे कैसे रह सकते हैं ?

सत वस्त ते सत ही उपजे, द्रव्य असत तें असत ही निपजे ।
इच्छा रहित ब्रह्म श्रुति के माहीं, उपज खपत तामें कछु नाहीं ॥४२॥

सत्य वस्तु से सत्य ही बनता है तथा असत्य वस्तु से असत्य की उत्पत्ति होती है । ब्रह्म सदा इच्छा से रहित है । ब्रह्म से कुछ भी बनता मिटता नहीं है । यह बात श्रुतियों में कही गई है ।

उपज खपत माया तें होई, वेद सास्त्र मध कह्यो जो सोइ ।
वेद कहत माया में भास, तातें करत सक्त प्रकास ॥४३॥

बनना और मिटना तो माया से होता है । वेद और शास्त्रों में यह स्पष्ट कहा गया है । वेद में कहा गया है कि माया में ब्रह्म के प्रतिबिम्ब का प्रकाश है, जिससे वह सारे जगत का संचालन करता है ।

Njanand App

किरना सूरज भेद न आए, माया ब्रह्म बीच बहु भाए ।
परस्पर प्रतिवादी दोऊ, एक पात्र मध्य रहे न कोऊ ॥४४॥

किरणों और सूर्य के अन्दर तो कुछ भेद नहीं होता जबकि माया और ब्रह्म में बहुत अन्तर है । दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं इसलिये दोनों एक पात्र में नहीं रह सकते क्योंकि ब्रह्म सत्य है, जगत नाशवान है । ब्रह्म चेतन है, जगत जड़ है । ब्रह्म आनन्दमय है तो जगत दुःखमय है ।

सत असत की जात है न्यारी, यामें रहे विचार बहु भारी ।
रहे प्रमान बचन सब केरे, यह बिध खोलो प्रस्न जो मेरे ॥४५॥

सत्य और असत्य की जाति एक दूसरे के उलट होती है । ये बात बहुत विचारणीय है । फिर आपके सब प्रमाण और वचन इसके सामने व्यर्थ हैं । मेरे प्रश्नों का कृपया उत्तर दीजिए ।

फेर वेदान्ती दरसन जेही, ब्रह्म बिना कछु कहत न तेही ।
माया को अनाद पुन कहे, माया सदा ब्रह्म मध्य रहे ॥४६॥

जब पातांजल दर्शन वाले श्री जी के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके तो अन्त में वेदान्त दर्शन वाले बोले कि हम ब्रह्म के बिना और कुछ बात ही नहीं करते हैं । माया सदा अनादि है और सदा ब्रह्म के अन्दर ही रहती है अर्थात् जहां माया है वहीं ब्रह्म है और जहां ब्रह्म है वहीं माया है ।

माया माहें ब्रह्म है व्यापक, सर्व देसी है सर्व लायक ।
ब्रह्म बिना दूजा जो देखे, तिनको हम अज्ञानी लेखें ॥४७॥

माया में ही कण-कण में ब्रह्म सर्वव्यापक है । सारे जगत को यदि कोई ब्रह्म के बिना देखता है तो उसे हम मूर्ख कहते हैं ।

अणु तें तुम हस्ती लों जानों, एक ब्रह्म सब माहिं बखानों ।
इच्छा रहित सबन तें न्यारा, करता कर्म न कछु बिचारा ॥४८॥

चींटी से लेकर हाथी तक सबमें एक ही ब्रह्म का वास है । वह सबसे परे इच्छारहित है । उसके लिए कर्ता और कार्य का विचार नहीं है ।

साक्षी : जो तुम सर्वत्र ब्रह्म कह्यो, तब तो अज्ञान कछुये नाहिं ।
तो खट सास्त्र भये काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहिं ॥४९॥

तब श्री जी ने कहा कि यदि आप ब्रह्म को सर्वव्यापक कहते हैं तो संसार में कोई भी अज्ञानी नहीं होना चाहिए फिर यह खट दर्शन और वेद किसके लिए बने हैं । यह समझाइए ।

Nijanand App

निराकार सब माहीं बिराजे, इच्छा रहित सदा छब छाजे ।
होत जगत कौन तें एही, मेटो आसंका तुम अब तेही ॥५०॥

श्री जी ने प्रश्न किया कि आप ब्रह्म को निराकार भी कहते हैं तथा सब के अंदर उसे विराजमान मानते हैं । यदि वह इच्छा से रहित है और शोभायुक्त है तो फिर वह जगत को कैसे बनाता है । आप मेरे इस संशय को दूर करें ।

ब्रह्म विषे माया कछु नाहीं, तीन काल रहित नहीं ताहीं ।
पुन अनाद माया को कही, ब्रह्म सर्वत्र माया बिध लही ॥५१॥

ब्रह्म में माया का तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) में प्रवेश नहीं होता अर्थात् ब्रह्म कभी भी माया में न था, न है और न होगा । आप माया को अनादि कहते हैं और ब्रह्म को कण-कण में बताते हैं, यह कैसे सम्भव है ?

ब्रह्म मध्य माया कौन विध, तीन काल नहीं आए ।
सर्वत्र ब्रह्म किहि बिध लसे, भेद कहो समझाए ॥५२॥

ब्रह्म में माया कभी भी तीनों काल में नहीं आ सकती है । ब्रह्म सर्वत्र किस प्रकार व्यापक है, इसका भेद समझाइये ।

पुन अनाद माया कही, कौन भाँत है सोए ।
निराकार साकार के, कहो भेद जो होए ॥५३॥

फिर आपने माया को भी अनादि कहा है तो वह किस प्रकार से अनादि है । माया निराकार है या साकार है इसके भी भेद बताइये ?

साखी : भिन्न आत्मा जगत ते, संकर कही प्रकास ।
पुन आत्मा सब में कही, कहो भेद प्रकास ॥५४॥

शंकराचार्य जी ने भी आत्मा जगत से अलग कही है और आप लोग सब के अन्दर आत्मा कहते हैं इसका भेद समझाइये ।

वेदान्तन से वाद बहु, भया जो मेला माहिं ।
कहाँ लों कहों बनाए के, देखो हते जो वाहिं ॥५५॥

हे सुन्दरसाथ जी ! वेदान्त मत वालों से कुम्भ के मेले पर बहुत वाद-विवाद हुआ परन्तु वे कोई भी उत्तर नहीं दे पाये । उस वाद-विवाद का कहां तक वर्णन करूं । जो सुन्दरसाथ वहां थे वे सब कुछ जानते हैं ।

Nijanand App

कोई कहे सबे ब्रह्म है, तब तो अज्ञान कछुए नाहीं ।
तो षट सास्त्र भये काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं ॥५६॥

श्री जी ने कहा कि आप कहते हैं कि ब्रह्म सब के अंदर है तो संसार में कोई भी व्यक्ति अज्ञानी नहीं होना चाहिए तो षट दर्शन किसके वास्ते बने हैं । मेरे मन में यह संशय है । इसे आप मिटाइये ।

ए सबे षट दर्सनी, षट सास्त्र अचारज जोए ।
न्यारे न्यारे मत सबे, सुने श्री राज नें सोए ॥५७॥

ये सब खट दर्शनी तथा छः शास्त्रों के आचार्यों के अलग-अलग मत को श्री जी ने सुना । श्री जी के प्रश्नों का कोई भी उत्तर नहीं दे सका ।

तब सब मत मारग नें मिलके, कही श्री जी सों विख्यात ।
अपने मत हम सब कहे, अब आप कहो साख्यात ॥५८॥

तब सब सम्प्रदायों के आचार्यों ने मिलकर श्री जी से कहा कि हे स्वामी जी ! हम सबने अपने-अपने मत की व्याख्या आपसे कही है । अब आप कृपया अपनी पहचान कराइये ।

कौन सास्त्र में कहां कही है, सो हमें कहो दे साख ।
नई राह है तुम्हारी, सो कहो हमें विध भाख ॥५९॥

आप भी कृपया हर बात की साक्षी कहां और किस शास्त्र में लिखी है उसे कहकर बताइये । मालूम होता है कि आपका सम्प्रदाय नया है । कृपया हमें उसके विषय में अच्छी तरह समझाइये ।

(श्री जी का जवाब)

कही व्यास हरवंस में, देखो संत विचार ।
जनमेजय राजा प्रते, सुनो विरोध तज सार ॥६०॥

तब आप श्री जी ने उत्तर दिया कि हमारी पहचान हरिवंश पुराण में व्यास जी ने राजा जनमेजय से कही है । कृपया अपने मन से विरोध को हटाकर उसे सुनिए ।

कही अनहोनी व्यासें नृपसों, नृप सुन पूछत सोए ।
ब्रह्म रूप मुनि प्रकट हैं, दुर्घट सब थे जोए ॥६१॥

व्यास जी ने जनमेजय से कहा कि हे राजा ! एक अनहोनी बात होने वाली है । राजा ने यह सुनकर व्यास जी से पूछा कि वह अनहोनी क्या बात है ? व्यास जी ने कहा कि हे राजा ! ब्रह्ममुनि इस जगत में प्रगट होंगे । यह सबसे अनहोनी बात है ।

Nijanand App